यूको मरुधरा

छमाही पत्रिका - अक्टूबर-मार्च 2026

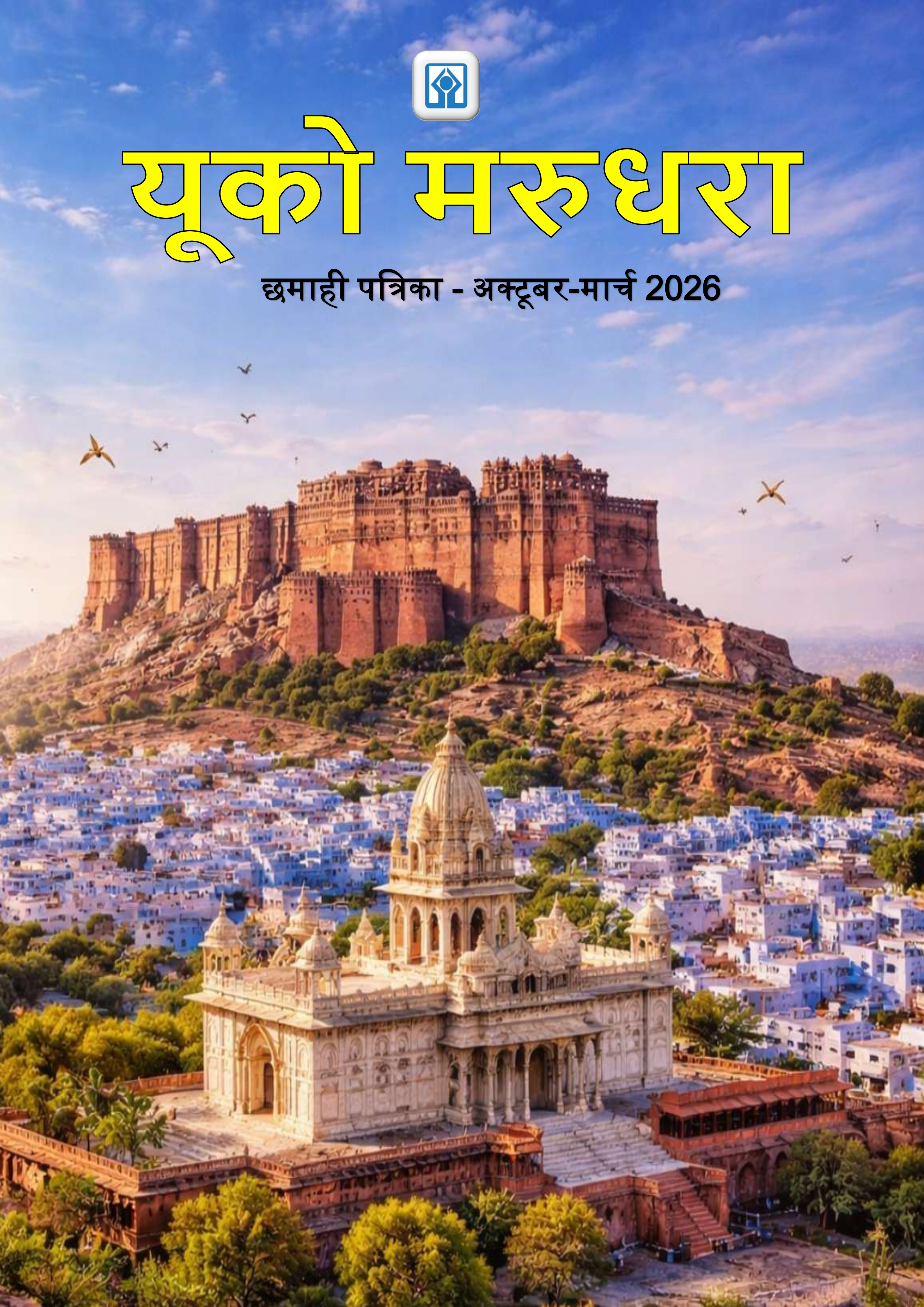

हमारा विज़न

"एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में सामने आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करता हो और जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो"

OUR VISION

"To emerge as the most trusted, admired and sought after world class financial institution and to be the most preferred destination for every customer and investor and place of pride for its employees."

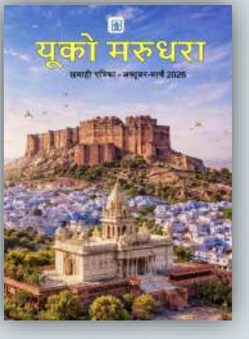

यूको मरुधरा

जोधपुर अंचल की छमाही गृह पत्रिका

अक्टूबर - मार्च 2026

संरक्षक

जितिन चौधरी
अंचल प्रमुख

दिग्दर्शन

दिनेश शर्मा
उप अंचल प्रमुख

संपादक

सरस्वती कुमारी
प्रबंधक - राजभाषा

एक टीम-एक स्वप्न -एक लक्ष्य

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, बैंक के नहीं।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
अंचल प्रमुख का संदेश	4
उप अंचल प्रमुख का संदेश	5
कविता - अस्तित्व	6
आपकी पूंजी आपका अधिकार	7
अंचल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां	8
कहानी	11
व्यावसायिक दृष्टिकोण से जोधपुर अंचल	13
सामान्य टिप्पणियाँ	21
मेरे सपनों का भारत	23
कविता - आओ प्रकृति से नाता जोड़ें	25
डिजिटल खाता	26
स्थापना दिवस	28
भारतीय कृषि	29
साइबर स्पेस और इंटरनेट	34
लक्ष्य 2.0	36
भारत विभिन्नताओं से बना एक सम्पूर्ण चित्र	37
ग्रामीण विकास में अग्रणी बैंक की भूमिका	40

राजभाषा विभाग, अंचल कार्यालय , जोधपुर
461, पाल लिंक रोड़, जोधपुर –342008
ई-मेल: zojodhpur.ol@uco.bank.in

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय युकोजन एवं पाठकगण

यूको बैंक अंचल कार्यालय, जोधपुर की छमाही पत्रिका "यूको मरुधरा" के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे संस्थागत कार्यों का दर्पण है, बल्कि हमारे विचारों, अनुभवों, नवाचारों और राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी सशक्त मंच है।

वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल बैंकिंग, साइबर सुरक्षा, ग्राहक-केंद्रित सेवाएं और वित्तीय समावेशन जैसे विषय हमारे कार्यक्षेत्र को निरंतर नई दिशा दे रहे हैं। यूको बैंक सदैव अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। ऐसे परिवेश में हमारी भूमिका केवल वित्तीय सेवाएं प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि हमें ग्राहकों के विश्वास का संरक्षक बनते हुए उन्हें सुरक्षित, सरल एवं त्वरित सेवाएं उपलब्ध करानी हैं।

इसके साथ ही, मैं राजभाषा हिंदी के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित करना चाहूंगा। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारे सांस्कृतिक और प्रशासनिक संवाद का सशक्त माध्यम है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग हमें आमजन से जोड़ता है और बैंकिंग सेवाओं को अधिक सुलभ एवं सहज बनाता है। जब हम ग्राहकों से उनकी भाषा में संवाद करते हैं, तो विश्वास का संबंध और अधिक प्रगाढ़ होता है। राजभाषा कार्यान्वयन हमारे लिए केवल एक वैधानिक दायित्व नहीं, बल्कि यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी है।

"यूको मरुधरा" जैसी पत्रिका इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह मंच हमें न केवल हिंदी में लेखन के लिए प्रेरित करता है, बल्कि हमारे विचारों और अनुभवों को साझा करने का अवसर भी प्रदान करता है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि इस अंक में बैंकिंग, राजभाषा, सामाजिक सरोकारों एवं समसामयिक विषयों पर विविध और ज्ञानवर्धक लेख शामिल किए गए हैं। यह निश्चय ही सभी पाठकों के लिए उपयोगी एवं प्रेरणादायक सिद्ध होंगे।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के संपादक मंडल एवं सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूं, जिन्होंने अपने परिश्रम और सृजनात्मकता से इस अंक को समृद्ध बनाया है। साथ ही, मैं सभी से आग्रह करता हूं कि वे भविष्य में भी इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य और निरंतर प्रगति की कामना के साथ।

जितिन चौधरी
अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख का संदेश

यूको बैंक अंचल कार्यालय, जोधपुर की छमाही पत्रिका “यूको मरुधरा” के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। यह पत्रिका हमारे संस्थान की प्रगति, कार्यसंस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, जो हम सभी को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य करती है।

वर्तमान बैंकिंग परिवेश निरंतर परिवर्तनशील है, जहां डिजिटल तकनीकों का विस्तार, ग्राहक अपेक्षाओं में वृद्धि तथा प्रतिस्पर्धा का बढ़ता स्तर हमें निरंतर बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है। ऐसे समय में हमारी प्राथमिकता गुणवत्तापूर्ण ग्राहक सेवा, पारदर्शिता तथा विश्वास को बनाए रखना है। हमें अपने कार्यों में दक्षता, नवाचार और उत्तरदायित्व को अपनाते हुए बैंक की साख को और अधिक सुदृढ़ करना है।

यूको बैंक की गौरवशाली परंपरा सदैव ग्राहकों के विश्वास और कर्मचारियों के समर्पण पर आधारित रही है। अंचल कार्यालय, जोधपुर के अंतर्गत कार्यरत सभी शाखाओं एवं विभागों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन, अनुशासन और टीम भावना से इस परंपरा को और सुदृढ़ किया है। मुझे विश्वास है कि हम सभी मिलकर आने वाले समय में भी बैंक को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सफल होंगे।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारे दैनिक बैंकिंग कार्यों में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी के माध्यम से हम ग्राहकों के साथ सरल, सहज एवं प्रभावी संवाद स्थापित कर सकते हैं, जिससे बैंकिंग सेवाएं अधिक सुलभ बनती हैं। राजभाषा का समुचित उपयोग न केवल हमारे वैधानिक दायित्वों की पूर्ति करता है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त बनाता है।

“यूको मरुधरा” जैसी पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का एक उत्कृष्ट मंच है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित लेख सभी के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होंगे। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि इस अंक में बैंकिंग, राजभाषा, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा समसामयिक विषयों पर विविध और उपयोगी सामग्री को सम्मिलित किया गया है। यह निश्चित रूप से सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मैं इस पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी साथियों को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप सभी इसी उत्साह के साथ बैंकिंग उत्कृष्टता के लिए निरंतर कार्य करते रहेंगे।

आप सभी को शुभकामनाएं,

दिनेश शर्मा
उप अंचल प्रमुख

संपादकीय

यूको बैंक अंचल कार्यालय, जोधपुर की छमाही पत्रिका "यूको मरुधरा" के द्वितीय अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे बैंक की कार्यसंस्कृति, सृजनात्मकता और राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण का जीवंत दस्तावेज है।

बैंकिंग के क्षेत्र में निरंतर हो रहे तकनीकी विकास और बदलती कार्यशैली के बीच भाषा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। जब बैंकिंग सेवाएं सरल, स्पष्ट और ग्राहकों की समझ में आने वाली भाषा में उपलब्ध होती हैं, तब उनका प्रभाव और स्वीकार्यता दोनों बढ़ जाते हैं। इस संदर्भ में राजभाषा हिंदी का उपयोग हमें ग्राहकों के और अधिक निकट लाता है तथा सेवा वितरण को प्रभावी बनाता है।

राजभाषा का कार्य केवल औपचारिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे दैनिक कार्यों का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। नोटिंग, ड्राफ्टिंग, पत्राचार एवं ग्राहक सेवा में हिंदी का अधिकतम प्रयोग हमें न केवल नियमों के अनुरूप बनाता है, बल्कि कार्य में सहजता और आत्मीयता भी लाता है।

"यूको मरुधरा" का यह अंक बैंकिंग, राजभाषा, सामाजिक सरोकारों एवं समसामयिक विषयों पर आधारित विविध लेखों से समृद्ध है। इसमें हमारे सहकर्मियों की रचनात्मक प्रतिभा, अनुभव और विचारों का सुंदर समावेश किया गया है। यह पत्रिका हम सभी के लिए एक साझा मंच है, जहां हम सीखते हैं, सिखाते हैं और आगे बढते हैं।

मैं सभी लेखकों, सहयोगियों एवं संपादकीय टीम का आभार व्यक्त करती हूं, जिनके अथक प्रयासों से यह अंक संभव हो सका। साथ ही, मैं सभी से आग्रह करती हूं कि वे राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अपने दैनिक कार्यों में और अधिक बढ़ावा दें तथा भविष्य में भी अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को समृद्ध बनाएं।

मुझे पूरा विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको बहुत पसंद आएगा एवं पत्रिका में लेखों/कविताओं के माध्यम से व्यक्त विचारों से पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे।

शुभकामनाओं सहित

सरस्वती कुमारी
प्रबंधक (राजभाषा)

कविता

संजय किरार
मुख्य प्रबंधक
मंडोर शाखा

अस्तित्व

लहर जिसे भ्रम है लहर होने का,
शांत जल में हलचल पिरोने का,

लहर जो केवल जल है,
जो नहीं है नियोजित

लहर मात्र हैं प्रायोजित।
जो बनती भी है मिटती है,

मगर बनने और मिटने का
इसका अपना कोई समीकरण नहीं।

लहर जो बनती हवा से,जल से,
गहराई और धरती के बल से,

लहर बेशक लुभा सकती है मुझको-तुमको
लहर ले सकती है श्रेय नाव खेने का,

पर क्या दे सकती है प्रमाण अपने होने का ?

****

आपकी पूंजी , आपका अधिकार अभियान

देश भर के बैंकों और वित्तीय संस्थाओं में पड़ी अनक्लेम्ड राशि को वापिस सही हाथों तक पहुंचाने के लिए भारत सरकार द्वारा “आपकी पूंजी, आपका अधिकार” अभियान शुरू किया है।

दिनांक 14.11.2025 को जोधपुर में “आपकी पूंजी, आपका अधिकार” अभियान के तहत जिला स्तरीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का शुभारंभ राजस्थान के कैबिनेट मंत्री माननीय श्री जोगाराम पटेल जी द्वारा किया गया। उन्होने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य नागरिकों को उनकी दावा न की गई जमा राशि, बीमा आय, डिविडेंड, शेयर, म्यूचुअल फ़ंड बैलेन्स और पेंशन देनदरियों का पता लगाने और उन पर दावा करने के लिए सक्षम बनाना है।

इस अभियान में यूको बैंक, अंचल कार्यालय जोधपुर द्वारा भी सक्रिय प्रतिभागिता की गई।

अंचल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां

गणतंत्र दिवस

दीपावली

स्वच्छता सप्ताह

अंचल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

एमएसएमई कृषि कार्निवल

लोहावट शाखा के नए भवन का शुभारंभ

मनोहर लाल अग्रवाल
भूतपूर्व स्टाफ सदस्य

कहानी

मैनेजर ने बुज़ुर्ग की तरफ़ मुस्कुराते हुए पूछा,
"क्या आपका यहाँ कोई खाता है?"

तभी उसके टेबल पर रखी फोन की घंटी तीखी आवाज़ में बज उठी।....!!
मैनेजर ने फोन उठाकर बात की और बुज़ुर्ग को इंतज़ार में छोड़ दिया।....!!

बूढ़े आदमी रामबाबू के हाथ में एक पुरानी पर्ची थी,
जो शायद उनके जीवन की पूरी कमाई का आखिरी सहारा थी।....!!

मैनेजर ने फोन रखकर चिढ़कर पूछा
"अरे बाबा, कितनी बार पूछूँ? खाता है कि नहीं?"..!!

रामबाबू ने पर्ची आगे बढ़ाई....!!
"बेटा... बहुत पुराना है... शायद बंद हो गया हो... पर थोड़ी रकम"

लोग हँसने लगे।
किसी ने कहा....!!
"बाबा को इंटरनेट क्या, खाता भी संभालना नहीं आता होगा!"....!!

रामबाबू ने शर्म से सिर झुका लिया।

तभी एक लड़की आगे आई।
नाम निधि, जो बैंक में इंटर्न थी।

उसने साफ़ कहा....!!
"सर, खाते का रिकॉर्ड चेक हो सकता है। कृपया पर्ची मुझे दें।"

मैनेजर झुँझला गया....!!
"तुम्हें बैंक चलाना है? ठीक है, समय बर्बाद करो।"

निधि ने पर्ची ली और कंप्यूटर में पुरानी फाइलें खोलने लगी।....!!
कई मिनट बाद अचानक उसकी आँखें चमक उठीं

"सर! यह खाता बंद नहीं हुआ है।
बस dormant है।"

पूरा बैंक चुप।
फिर उसने कहा....!!

"और इस खाते में... 1,78,200 रुपये हैं।"
बैंक में हलचल मच गई।....!!
रामबाबू काँपते हुए बोले
"इतने...? बिटिया, तू मज़ाक तो नहीं कर रही?"

निधि ने सिर हिलाया....!!
"नहीं बाबा, ये आपका ही पैसा है।"

मैनेजर तुरंत मीठा बन गया,
पर रामबाबू ने एक ही वाक्य में उसे चुप कर दिया

"अगर खाते में दस रुपये भी होते...
तो भी तुम मेरे साथ ऐसे ही व्यवहार करते?"

मैनेजर की गर्दन झुक गई।....!!

निधि ने उनका हाथ पकड़ा
"बाबा, आज से आपका हर काम मैं संभालूँगी।"

रामबाबू की आँखें नम हो गईं।...
कितने सालों बाद उन्हें किसी में अपनी बेटी दिखी थी।

रामबाबू ने सिर्फ़ 2000 रुपये निकाले।
बाकी छोड़ दिए।...!!
निधि ने पूछा.....!!
"बाबा, क्यों?"

वह मुस्कुराए.....
"बेटा, बाकी भविष्य के लिए।
और मैं चाहता हूँ कि तुम जानो
इंसान का असली बैलेंस, उसका बर्ताव होता है।"

अगले दिन बैंक में नया नोटिस लगा
"वरिष्ठ नागरिक प्राथमिक काउंटर"......

लोग पूछते रहे ये क्यों हुआ,
और निधि मुस्कुराती रही
क्योंकि यह परिवर्तन उसने करवाया था।

और प्रेरणा?
वह बूढ़ा आदमी, जिसकी आँखों में इज़्ज़त की आखिरी लौ थी।

पर कहानी का असली मोड़...
शाम को रामबाबू फिर आए।
हाथ में छोटा-सा कपड़े का पैकेट।....!!

"बिटिया... ये ले।
तेरी अम्मा की आखिरी निशानी है
वह इसे बेटी को देना चाहती थी।
मेरे बच्चे तो आज भी मुझे भूल गए...
तूने मुझे वो सम्मान दिया,
जो किसी ने नहीं दिया।"
निधि की आँखें भर आईं।....!!

अंदर एक पुराना चाँदी का सिक्का था।
रात को फोन आया.....!!
"क्या आप निधि बोल रही हैं?
रामबाबू सड़क पर बेहोश मिले थे..."

वह अस्पताल पहुँची
पर रामबाबू जा चुके थे।....!!

उनके हाथ में वही पर्ची थी
जिसे वे आखिरी साँस तक पकड़े रहे।

दो हफ्ते बाद...
बैंक ने निधि को सूचना दी
"रामबाबू जी ने अपनी पूरी बची रकम
आपके नाम करने की लिखित मंजूरी दी है।"

निधि सुन्न रह गई।

अंत...
निधि ने पैसे नहीं लिए।
उसने एक ट्रस्ट बनाया

"रामबाबू सम्मान योजना"....!!

ताकि कोई बुज़ुर्ग
अपमानित न हो।....!!

हर साल एक बुज़ुर्ग की मदद
उसी पैसे से होती है
जो एक 40 साल पुराने खाते में
चुपचाप जमा होता रहा।

सीख .....!!
इंसान बूढ़ा नहीं होता जब तक सम्मान उसके साथ हो।
और किसी का दिल रखना,
किसी का पैसा रखने से हमेशा बड़ा होता है।

व्यावसायिक दृष्टिकोण से जोधपुर अंचल : वित्तीय वर्ष 2025-26

वित्तीय वर्ष 2025-26 में अधिकतम मानक (पैरामीटर) प्राप्तकर्ता

1

नेहरू पार्क -1762

2

चामू -1095

2

ओसियां - 3170

2

पदमपुर -3415

सामान्य लेखा(GL) वृद्धि : शीर्ष 3 योगदानकर्ता

बचत खाता जमा

1

सालावास -1301

2

लोहावट - 0450

3

बोरानाडा -1200

चालू खाता जमा

1

जोधपुर मुख्य - 0086

2

फलोदी – 0882

3

नेहरू पार्क -1762

यूको कार ऋण: शीर्ष 3 शाखाएं

1

नेहरू पार्क -1762

2

बीकानेर मुख्य - 0116

3

शंकर नगर - 3384

यूको गृह ऋण(अधिकतम स्वीकृत राशि) : शीर्ष 3 शाखाएं

1

चोपासनी हाउसिंग बोर्ड – 3223

2

बीकानेर मुख्य - 0116

3

जोधपुर मुख्य - 0086

यूको गृह ऋण(अधिकतम संख्या) : शीर्ष 3 शाखाएं

1

समतानगर - 3255

2

जोधपुर मुख्य - 0086

3

सालावास - 1301

एमएसएमई : शीर्ष 3 शाखाएं

1

पावटा - 1558

2

नेहरू पार्क - 1762

3

मिड कॉर्पोरेट सरदारपुरा - 0569

कृषि : शीर्ष 3 शाखाएं

1

नेहरू पार्क - 1762

2

पावटा - 1558

3

ओसियां - 3170

वसूली : शीर्ष 3 शाखाएं

1

पावटा - 1558

2

देचू - 1558

3

बोरानाडा - 1558

एनडीएनडी(NDND) : शीर्ष 3 शाखाएं

1

देचू - 1558

2

पीलवा - 1067

3

सेतरावा - 0976

एम बैंकिंग : शीर्ष 3 शाखाएं

1

बावड़ी - 0538

2

लोहावट - 0450

3

बालेसर सत्ता - 1088

डेबिट कार्ड : शीर्ष 3 शाखाएं

1

बावड़ी - 0538

2

देचू - 1196

3

बाप - 0881

कारोबार

डिजिटल एफ़डीआर : शीर्ष 3 शाखाएं

1

श्रीकृष्णनगर - 3492

2

सांचोर - 2814

3

भीनमाल - 3338

मर्चेन्ट क्यूआर कोड : शीर्ष 3 शाखाएं

1

बावड़ी - 0538

2

जैसलमेर - 2127

3

रायसिंहनगर - 2976

ई बैंकिंग : शीर्ष 3 शाखाएं

1

भदवासिया - 3491

2

सेतरावा - 0976

3

बावड़ी - 0538

एपीवाई : शीर्ष 3 शाखाएं

1

बालेसर सत्ता - 1088

2

लोहावट - 0450

3

कलाऊ - 3061

पीएम एसबीवाई : शीर्ष 3 शाखाएं

1

जैसलमेर - 2127

2

लोहावट - 0450

3

बाड़मेर - 2422

पीएम जेजेबीवाई : शीर्ष 3

1

खारिया मीठापुर -1187

2

लोहावट - 0450

3

फलोदी - 0882

सामान्य टिप्पणियाँ
General Noting's

Issue may be discussed	मामले पर विचार किया जाए
Issue may be raised	मामला उठाया जाए/पूछा जाए
Issue may be settled	मामला निपटाया जाए
Issue reminder urgently	अनुस्मारक शीघ्र भेजें
I have satisfied myself	मैंने अपनी संतुष्टि कर ली है
It contravenes our instructions	यह हमारे अनुदेशों के प्रतिकूल है
It is admissible	यह स्वीकार्य है
It is highly objectionable	यह अत्यंत आपत्तिजनक है
It is not our practice	यह हमारी परम्परा नहीं है
It may further be added	यह भी बताया जाता है
It need not be sent	इसे भेजने की आवश्यकता नहीं
It should be discontinued	इसे बंद कर दिया जाए / कर दें
It should be kept in view	इसका ध्यान रखें / रखा जाए
It will be considered	इस पर विचार किया जाएगा
It will be construed	इससे यह अर्थ समझा जाएगा
Keep pending	इस पर कार्रवाई अभी स्थगित रखें
Line of action	कार्रवाई की दिशा
Material facts should not be ignored	महत्वपूर्ण तथ्यों की उपेक्षा न करें
Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
May be considered	विचार किया जाए
May be informed accordingly	तदनुसार सूचित किया जाए
May be permitted	अनुमति दी जाए
May be requested to clarity	स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने के लिए अनुरोध करें
May be treated as urgent	इसे आवश्यक समझें
May be waived	छूट दी जाए/छूट दी जा सकती है
May not pursue the matter	इस विषय को आगे न बढ़ाएं

May please see	कृपया देखें
May take steps	कार्रवाई करें
Mentioned above	उपर्युक्त
Mentioned therein	उसमें उल्लिखित
Necessary action may be taken/initiated	आवश्यक कार्रवाई की जाए/प्रारंभ की जाए
Necessary draft is put up	आवश्यक प्रारूप प्रस्तुत है
Necessary steps should be taken	आवश्यक कार्रवाई की जाए
Needful done	आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है
Needs no comments	टिप्पणी की आवश्यकता नहीं
No action necessary	कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं
Obtain formal sanction	औपचारिक संस्वीकृति प्राप्त करें
On account of	के कारण
On an experimental basis	प्रायोगिक आधार पर
On deputation	प्रतिनियुक्ति पर
On-going basis	निरंतर आधार पर
On grounds of	के आधार पर
On or after the day	उस दिन या उसके पश्चात्
On perusal of the application	आवेदन-पत्र का अवलोकन करने पर
On the lines of	के समान, की शैली पर
Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
Orders are solicited	आदेश देने की कृपा करें
Papers for disposal	निपटान के लिए कागज-पत्र
Papers submitted/put up for perusal	कागज-पत्र अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Pending the conclusion of enquiry	जाँच समाप्त होने तक
Placed below	नीचे प्रस्तुत
Please acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें
Please appear in person	कृपया स्वयं उपस्थित हों

मेरे सपनों का भारत

मेरे सपनों का भारत, यह सुनते ही अंतर मन से एक अलग आनंद की अनुभूति महसूस होने लगती है। हम एक अलग दुनिया में पहुँच जाते हैं जहां चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ हों, हर व्यक्ति समृद्ध, खुशहाल हो तथा जहां किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं हो, बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, बीमारी आदि नहीं हो, लेकिन यथार्थ में ऐसा नहीं है। हमारे देश ने कई वर्षों तक गुलामी की पीड़ा सहन की। इसको आजाद करने के लिए बड़ी तादाद में स्वतन्त्रता सेनानियों ने कुर्बानी दी। उनके द्वारा गहन पीड़ा सहन करने के पश्चात हमें आज़ादी की हवा में सांस लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होने भारत को आजाद करने तथा आजाद भारत के साथ साथ सम्पूर्ण विश्व को सुखी एवं समृद्ध बनाने का सपना देखा। यहाँ आजादी का अर्थ केवल विदेशी दासता से मुक्ति न होकर सम्पूर्ण आजादी से है जिसमे की सभी व्यक्तियों की वैचारिक आज़ादी भी है।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। कभी भी एवं कहीं भी सबके विचार सदैव एक समान नहीं हो सकते। हमें दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना आना चाहिए। विचारों में देश और काल के अनुसार भी बदलाव आवश्यक है। जिस प्रकार ठहरे हुए पानी में कीड़े पड़ जाते हैं और बहता हुआ पानी हमेशा स्वच्छ एवं निर्मल होता है,उसी प्रकार पानी एवं विचारों का प्रवाह हमेशा बहता हुआ होना चाहिए। इसके अतिरिक्त कोई भी सिद्धान्त सभी जगह समान रूप से लागू नहीं हो सकता। जो विचार अथवा सिद्धान्त हमारे लिए सही हो, यह आवश्यक नहीं है की वो सभी जगह समान रूप से प्रभावी हो। इसका अर्थ यह है कि समय के साथ भी हर चीज में परिवर्तन होना चाहिए और व्यक्ति की सोच में भी समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है, परंतु यह परिवर्तन सकारात्मक दिशा में होना चाहिए।

वर्षों तक गुलामी में रहने के कारण हम अभी तक मानसिक तौर पर गुलामी से मुक्त नहीं हुए है। अभी भी हम पश्चिमी देशों का अनुसरण कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते है। ऐसा नहीं है कि पश्चिमी देशों में कोई भी अच्छाई नहीं थी। उनकी अच्छी आदतों अथवा विचारों को अपनाने में कोई बुराई नहीं है लेकिन बिना सोच-विचार के अंधानुकरण करना भी गलत है। हमारे देश की विशेषता रही है कि हम हमेशा विश्व कल्याण की भावना से कार्य करते है। विश्व कल्याण का यहाँ अर्थ विश्व की सामाजिक आर्थिक कल्याण से है। लेकिन मेरा यह मानना है कि विश्व कल्याण के साथ साथ हम अपना भी ध्यान रखें। इस संबंध में मुझे मशहूर प्रार्थना का उल्लेख करना चाहूँगा “हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें, दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें” अर्थात हमें दूसरों के ऊपर अपने विचार थोपने से पहले हमें खुद को आदर्शों पर चलने के लिए तैयार करना होगा, क्योंकि किसी भी परिवर्तन की शुरुआत हमेशा खुद से शुरू होती है और समाज, देश से होती हुई सुदूर विश्व तक पहुँचती है।

यदि हम इसके अतीत की बात करें तो हमारे भारत का अतीत बहुत ही गौरवशाली रहा है जिसमें बहुत से ऋषि मुनियों, महात्मा एवं महापुरुषों ने जन्म लिया और जिनके दिये गए आदर्शों के कारण विश्व में भारत की एक अलग

पहचान है, और हम सबको भारतीय होने पर गर्व महसूसहोता है। लेकिन वर्तमान भारत में जो आदर्श हमारे पूर्वजों ने वर्षों की मेहनत से स्थापित किए थे, उनके प्रति आस्था धीरे- धीरे कम होती जा रही है। मैं **"मेरे सपनों के भारत"** में भारत को वह पहचान दिलाने का स्वप्न देखता हूँ।

प्राचीन काल में हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता रहा है। कालांतर में बाहर से आए हुए आतताइयों ने हमारे देश को लूटा, धार्मिक स्थलों को तहस नहस किया और हमारी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई। आज हमारे देश से वो सोने की चिड़िया गायब हो चुकी है। यदि हम हमारे देश को वापस वह स्थान अथवा सम्मान दिलाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए पुनः कड़ी मेहनत करनी होगी। मैं **"मेरे सपनों के भारत"** में भारत को यह स्थान एवं सम्मान वापस दिलाना चाहता हूँ।

किसी भी देश की तरक्की में तकनीक और विज्ञान के योगदान को नहीं नकारा जा सकता। हमारे देश ने पूरे विश्व को कई महान वैज्ञानिक दिये हैं, लेकिन उनमे से अधिकांश को विदेश में जाकर पहचान मिली। हमें प्रयास करने होंगे कि हमारे देश से प्रतिभा का पलायन न हो। मैं **"मेरे सपनों के भारत"** में चाहता हूँ कि उन्हे यहीं पर वो सभी सुविधा तथा संसाधन मिले जिससे कि वे लोग यहीं पर रहकर हमारे देश की तरक्की में योगदान प्रदान कर उचित सम्मान प्राप्त कर सकें, और भारत का नाम रोशन कर सकें।

आज देश में भ्रष्टाचार गरीबी भुखमरी अपराध दिनोदिन बढ़ते जा रहे है, जबकि आज़ाद भारत में इनका कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यत्र नार्यस्तू पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। जिस देश में महिलाओं की पूजा की जाती थी वहाँ पर महिलाओं के प्रति अपराध भी दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे है। मैं **"मेरे सपनों के भारत"** में महिलाओं को वह स्थान पुनः दिलाने का स्वप्न देखता हूँ।

हमारे देश में सभी धर्मों एवं जातियों का सम्मान समान रूप से करने की परंपरा रही है। हम लोग सभी धर्मों के त्यौहार एक साथ मिलकर मानते है। दिवाली और ईद पर मिठाई और सेवइयों का आदान प्रदान हमारे यहाँ आम बात है। लेकिन समय के साथ कुछ स्वार्थी तत्वों ने अपने निजी स्वार्थ के चलते हमारी धार्मिक भावनाओं को भड़काकर हमारे बीच वैमनस्य का भाव पैदा कर दिया और पड़ोसियों को एक दूसरे से लड़वा दिया। समय के साथ यह दूरी बढ़ती गई और आज एक गहरी खाई में तब्दील हो गयी है। मैं **"मेरे सपनों के भारत"** में चाहता हूँ कि हमारे बीच सोहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण हो तथा यह भाईचारे की यह भावना पुनः स्थापित हो।

****

मुकेश कुमार
मुख्य प्रबन्धक
अंचल कार्यालय जोधपुर

"मेरे सपनों का भारत एक विकसित राष्ट्र होगा, जो ज्ञान,तकनीक और आत्मनिर्भरता के बल पर विश्व में अग्रणी बनेगा।"

आओ प्रकृति से नाता जोड़ें

पतझड़ आया, पत्ते झरते,
सूने लगते पेड़ ये तरते।
पीले, भूरे पत्ते गिरते,
धरती पर जैसे सोना बिखरते।

हवा चले तो पत्ते उड़ते,
धीरे-धीरे नीचे मुड़ते।
पेड़ खड़े हैं शांत निराले,
जैसे पहने वस्त्र पुराने।

कुछ उदासी, कुछ है सन्नाटा,
पर इसमें भी छिपा है नाता।
नए पत्ते फिर आएँगे,
जीवन में रंग भर जाएँगे।

पतझड़ देता हमें ये सीख,
बदलाव से मत होना भीत।
हर अंत में शुरुआत है,
यही प्रकृति की बात है।

बसंत आया, खुशियाँ लाया,
चारों ओर हरियाली छाया।
फूल खिले रंग-बिरंगे,
मन को करते सब प्रसन्न।

कोयल गाए मीठे गाने,
भौंरे गुनगुन करते जाने।
ठंडी-ठंडी हवा चले,
मन में नई उमंग जगे।

पीले सरसों खेतों में,
मुस्कान बिखरी हर रेतों में।
तितली नाचे फूलों पर,
सपने सजें हर दिल के घर।

बसंत ऋतु है सबसे प्यारी,
लाती खुशियाँ न्यारी-न्यारी।
प्रकृति का ये सुंदर रूप,
भर देता जीवन में धूप।

पेड़ हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।
छाया, फल और शुद्ध हवा,
उसका ऋण हम लेना सीखें।

धूप में खड़ा हमें बचाता,
पक्षियों का घर बनाता।
मीठे फल हमको खिलाता,
फिर भी कुछ न कह पाता।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ,
धरती को फिर से हरियाएँ।
जल, जीवन और खुशहाली,
पेड़ों से ही सब पाएं।

पेड़ बचाना है कर्तव्य हमारा,
यही है सबसे सच्चा सहारा।
प्रकृति का मान बढ़ाना सीखें,
हम भी कुछ देना सीखें।

आओ प्रकृति से नाता जोड़ें,
हरी-भरी दुनिया को थोड़ा मोड़ें।
पेड़, नदी और खुला आसमान,
इनसे ही है जीवन की पहचान।

चिड़ियों की मीठी बोली सुनें,
फूलों की खुशबू को हम चुनें।
हवा का स्पर्श सुकून दिलाए,
मन को शांति पास बुलाए।

मोबाइल छोड़, प्रकृति अपनाएँ,
खुले गगन में सपने सजाएँ।
धरती माँ का मान बढ़ाएँ,
उसकी गोद में सुख हम पाएँ।

प्रकृति से जो जुड़ना सीखे,
जीवन जीना वो ही सीखे।
सच्ची खुशियाँ वहीं मिलेंगी,
जहाँ हरियाली दिल को छू लेगी।

****

कृष्ण कुमार
सहायक प्रबंधक
अंचल कार्यालय

डिजिटल खाता – बदलती बैंकिंग का नया अध्याय

समय के साथ दुनिया बदलती है और उसके साथ बदलती हैं हमारी कार्यप्रणालियाँ भी। एक समय था जब बैंक का नाम सुनते ही लोगों के मन में मोटी-मोटी फाइलें, भारी रजिस्टर और लंबी-लंबी कतारों की तस्वीर उभर आती थी। खाता खुलवाने के लिए ग्राहक को कई बार शाखा के चक्कर लगाने पड़ते थे। फॉर्म भरना, दस्तावेज़ जमा करना, सत्यापन कराना- यह सब एक लंबी प्रक्रिया हुआ करती थी। लेकिन तकनीक की तेज़ रफ्तार ने बैंकिंग के इस पारंपरिक स्वरूप को भी नई दिशा दे दी। अब बैंकिंग केवल काउंटर तक सीमित नहीं रही, बल्कि डिजिटल माध्यमों के जरिए लोगों के जीवन का सहज हिस्सा बन गई है। राजस्थान के एक छोटे से कस्बे में स्थित बैंक की एक शाखा भी इस बदलाव की साक्षी बन रही थी। शाखा में रोज़ की तरह ग्राहकों की आवाजाही लगी रहती थी। कोई पासबुक अपडेट कराने आया था, कोई पैसे जमा कराने, तो कोई ऋण की जानकारी लेने। इसी शाखा में हाल ही में युवा बैंक अधिकारी अमित की नियुक्ति हुई थी। अमित ऊर्जा से भरपूर और नई तकनीक को अपनाने वाले अधिकारी थे। उनका मानना था कि बैंकिंग केवल लेन-देन का कार्य नहीं, बल्कि लोगों के जीवन को सरल बनाने का माध्यम है। एक दिन दोपहर के समय शाखा में एक बुज़ुर्ग किसान रामलाल जी आए। सिर पर पगड़ी, चेहरे पर धूप की झुर्रियाँ और आँखों में हल्की-सी झिझक- वह धीरे-धीरे काउंटर की ओर बढ़े। उन्होंने संकोच भरे स्वर में कहा- "बेटा, मुझे बैंक में खाता खुलवाना है...

लेकिन सुना है इसमें बहुत समय लगता है। खेत का काम भी रहता है, इसलिए बार-बार आना मुश्किल हो जाता है।" अमित ने मुस्कुराते हुए उन्हें बैठने का आग्रह किया और कहा- "रामलाल जी, अब बैंकिंग पहले जैसी नहीं रही। अब हम आपका डिजिटल खाता कुछ ही मिनटों में खोल सकते हैं। "डिजिटल खाता?" रामलाल जी ने आश्चर्य से पूछा। "यह कैसे होता है?" अमित ने बड़े धैर्य से उन्हें समझाया- "अब बैंकिंग में डिजिटल तकनीक का उपयोग होने लगा है। आपके आधार कार्ड और मोबाइल नंबर के माध्यम से हम तुरंत आपकी पहचान सत्यापित कर सकते हैं। इससे कागज़ों की जरूरत कम हो जाती है और आपका खाता बहुत जल्दी खुल जाता है।" रामलाल जी को यह बात किसी नए अनुभव जैसी लगी। उन्होंने अपने कुर्ते की जेब से सावधानी से आधार कार्ड निकाला और अमित को दे दिया। अमित ने कंप्यूटर पर प्रक्रिया शुरू की। आधार सत्यापन हुआ, कुछ आवश्यक विवरण दर्ज किए गए और कुछ ही मिनटों में स्क्रीन पर संदेश आया- "खाता सफलतापूर्वक खुल गया है।" अमित ने मुस्कुराते हुए कहा- "रामलाल जी, बधाई हो! आपका खाता खुल गया है।" रामलाल जी को विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने आश्चर्य से कहा- "इतनी जल्दी? पहले तो लोग बताते थे कि खाता खुलवाने में कई दिन लग जाते हैं।" अमित ने उन्हें एटीएम कार्ड, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल भुगतान की सुविधाओं के बारे में भी बताया। उन्होंने समझाया कि अब वे अपने मोबाइल के माध्यम से खाते की जानकारी देख सकते हैं, पैसे भेज सकते हैं और जरूरत पड़ने पर एटीएम से नकद भी निकाल सकते हैं।

रामलाल जी संतोष के साथ शाखा से बाहर निकले। उनके मन में यह विचार बार-बार आ रहा था कि तकनीक ने सचमुच जीवन को कितना सरल बना दिया है।

कुछ महीनों बाद एक दिन रामलाल जी फिर उसी शाखा में आए। इस बार उनके चेहरे पर पहले जैसी झिझक नहीं थी, बल्कि आत्मविश्वास झलक रहा था। उन्होंने मुस्कुराते हुए अमित से कहा- “बेटा, पहले मुझे बैंक का काम बहुत कठिन लगता था। लेकिन इस डिजिटल खाते ने मेरी जिंदगी आसान कर दी है। अब मैं घर बैठे अपने पैसे का हिसाब देख लेता हूँ। सरकार की जो सहायता राशि आती है, वह भी सीधे मेरे खाते में आ जाती है।” उन्होंने आगे कहा- “अब मुझे किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ती। मेरा अपना बैंक खाता है और मैं खुद अपने पैसों का हिसाब रख सकता हूँ।” अमित यह सुनकर भावुक हो गए। उन्हें महसूस हुआ कि बैंकिंग की असली सफलता केवल खातों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि लोगों के जीवन में भरोसा और आत्मनिर्भरता पैदा करना है। आज डिजिटल बैंकिंग ने बैंक और ग्राहक के बीच की दूरी को काफी हद तक कम कर दिया है। अब बैंक केवल चार दीवारों के भीतर सीमित नहीं रहा। वह हर व्यक्ति के मोबाइल में, उसकी उंगलियों के स्पर्श में और उसकी दैनिक जरूरतों में शामिल हो चुका है। डिजिटल खाता केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि आधुनिक बैंकिंग का वह सेतु है जो तकनीक और आम आदमी के जीवन को जोड़ता है। और यही वह परिवर्तन है जो बैंकिंग को केवल सेवा नहीं, बल्कि समाज के विकास का सशक्त माध्यम बना रहा है।

****

अन्नू गोदारा
सहायक प्रबन्धक
अंचल कार्यालय जोधपुर

स्थापना दिवस

यूको बैंक
UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust
84th
YEAR OF
THE NATION'S
TRUST

रक्तदान कैम्प

भारतीय कृषि : वर्तमान एवं भविष्य

भारत अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है और वर्ष 2047 में अपनी आजादी के 100 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाएगा, लेकिन विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य अभी भी बड़ा है। इस मील के पत्थर को हासिल करने के लिए प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में उल्लेखनीय वृद्धि की आवश्यकता है, जो वर्तमान स्तर से लगभग छह गुना अधिक है। इसके लिए एक व्यापक विकास दृष्टिकोण की आवश्यकता है, विशेष रूप से कृषि के क्षेत्र में और भारतीय कृषि के भविष्य पर ध्यान केंद्रित करना, जिस पर 40% से अधिक भारतीय कार्यबल निर्भर करता है।

भारत की कृषि नीति के बारे में

- सरकार एक निश्चित समय सीमा के भीतर **कृषि उत्पादन और उत्पादकता** बढ़ाने तथा **किसानों की आय और जीवन स्तर** को बेहतर बनाने के लिए भारत की कृषि नीतियों को डिज़ाइन करती है।

- भारत की कृषि नीति कृषि क्षेत्र के **सर्वांगीण और व्यापक विकास** के लिए तैयार की गई है।

- कृषि नीति का उद्देश्य **संसाधन प्रबंधन, प्रौद्योगिकी अपनाने और बाजार तक पहुँच** जैसे प्रमुख मुद्दों को संबोधित करना है।

- स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने, **बुनियादी ढाँचे में सुधार** करने और **नवाचार का समर्थन** करके, कृषि नीति एक मजबूत और लचीला कृषि क्षेत्र बनाने का प्रयास करती है जो वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सके।

- आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका

- भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और यह केवल आजीविका का साधन ही नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका भी है। भारत सरकार नए कानून बनाकर, आधुनिक तकनीक लागू करके, कृषि क्षेत्र का निरंतर विकास कर रही है। भारत में, पूरा देश भोजन के लिए कृषि पर निर्भर है। पहले कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर थी, लेकिन अब बाँध, नहरें, पंपसेट और नलकूप बनाए जा रहे हैं।

- भारत के आर्थिक विकास में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि देश की तीन-चौथाई आबादी कृषि पर आधारित है। यह देश की आजीविका के सबसे बड़े स्रोतों में से एक है। देश एक हज़ार वर्षों तक कृषि पर निर्भर रहा।

- कृषि क्षेत्र उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त करने में भी बिना मदद करता है, जिससे स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र के अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा ठप हो जाएगा। इससे औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार होता है। भारतीय कृषि अधिकांश लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करती है,

और 70% आबादी, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, खेती से अपनी आजीविका कमाती है।

- भारत में, विदेशी मुद्रा बढ़ाने में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत अन्य देशों को कॉफ़ी, मसाले, चाय, सब्ज़ियाँ, तंबाकू आदि जैसी वस्तुओं का निर्यात करता है। कृषि भारतीय निर्यात में योगदान देती है। जैविक खेती के आविष्कार के साथ, पिछले कुछ दशकों में निर्यात में भी वृद्धि हुई है।

- भारत में कृषि सुधार के लिए सरकारी योजनाएँ

- केंद्र और विभिन्न राज्य सरकारों ने भारत में कृषि को वास्तव में टिकाऊ बनाने और युवाओं को कृषि क्षेत्र में बनाए रखने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं। कृषि क्षेत्र में सरकार द्वारा शुरू की गई कुछ योजनाएं इस प्रकार हैं:

- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY): यह योजना भारत सरकार द्वारा प्राकृतिक आपदाओं, कीटों या बीमारियों जैसी किसी अप्रत्याशित घटना के कारण फसल खराब होने की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए शुरू की गई थी। यह किसानों को नुकसान से उबरने और उनकी आय को स्थिर करने में मदद करती है।

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई): पीएमकेएसवाई का उद्देश्य कृषि उत्पादकता में सुधार लाना और संसाधनों का बेहतर तरीके से उपयोग सुनिश्चित करना है। यह जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और टिकाऊ सिंचाई स्रोतों के विकास के माध्यम से सिंचाई प्रणाली में दक्षता को बढ़ावा देता है।

- मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना: यह योजना भारत सरकार द्वारा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई थी, इस योजना का उद्देश्य किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करना है जिसमें उनकी मिट्टी की पोषक स्थिति के बारे में जानकारी होती है। संरचना के आधार पर, किसानों को उत्पादकता बढ़ाने के लिए पोषक तत्व प्रबंधन और उपयोग किए जाने वाले उर्वरकों की मात्रा पर सुझाव मिलते हैं।

- परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY): इस योजना के माध्यम से भारत में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाता है। इस योजना के तहत पारंपरिक खेती के तरीकों को प्रोत्साहित किया जाता है।

- किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी): किसान क्रेडिट कार्ड योजना किसानों को उनकी फसल उत्पादन और अन्य संबंधित खर्चों के लिए बहुत कम ब्याज दरों पर अल्पकालिक ऋण प्रदान करती है। इसका उपयोग बीमा उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है।

- ई-नाम: यह कृषि वस्तुओं के व्यापार के लिए एक ऑनलाइन मंच है। यह पूरे भारत के बाजारों को एकीकृत करता है, जिससे किसानों को एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार मिलता है, जिससे वे अपनी फसल को बेहतर कीमत पर बेच सकते हैं।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान): इस केंद्रीय क्षेत्र की योजना के तहत छोटे और सीमांत किसानों को प्रति वर्ष ₹6,000 की आय सहायता प्रदान की जाती है। लाभार्थियों की पहचान करने की जिम्मेदारी राज्य सरकार पर है।

- **प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना (पीएम केएमवाई)** : यह छोटे और सीमांत किसानों के लिए एक पेंशन योजना है। 60 वर्ष की आयु होने पर उन्हें प्रति माह

न्यूनतम 3,000 रुपये की पेंशन मिलनी शुरू हो जाएगी।

उदारीकरण के बाद के युग में कृषि क्षेत्र में उभरती प्रवृत्तियों में उत्पादन में वृद्धि, निवेश में वृद्धि, क्षेत्र का विविधीकरण, आधुनिक तकनीकों का उपयोग, बागवानी और पुष्प-कृषि का विकास, निर्यात की मात्रा में वृद्धि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का विकास शामिल हैं।

कृषि प्रौद्योगिकी में कुछ हालिया रुझान:

कृषि ड्रोन प्रौद्योगिकी-

ड्रोन का इस्तेमाल चिकित्सा सेवाओं से लेकर सुरक्षा सहायता तक, और कृषि में फसलों की वृद्धि, रखरखाव और खेती के तरीकों को बेहतर बनाने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।

उदाहरण के लिए, इन हवाई वाहकों का उपयोग फसलों की स्थिति का आकलन करने और अधिक उपज के लिए बेहतर उर्वरक रणनीतियों को लागू करने के लिए किया जाता है।

यहाँ तक कि उड़ते हुए रोबोट की उपलब्धता भी किसानों को बड़े क्षेत्रों का सर्वेक्षण करने और डेटा संग्रह के माध्यम से अपने खेतों के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करने में मदद करती है। कृषि में ड्रोन के उपयोग से फसलों और पशुधन की अधिक लगातार और किफ़ायती दूरस्थ निगरानी संभव हुई है। यह खेत की स्थितियों का विश्लेषण करने और उर्वरकों, पोषक तत्वों और कीटनाशकों जैसे उपयुक्त हस्तक्षेपों का निर्धारण करने में भी मदद करता है।

कृषि विविधीकरण-

कृषि क्षेत्र सामान्य उपभोग की ज़रूरतों के साथ-साथ फल, सब्ज़ियाँ, मसाले, काजू, सुपारी, नारियल जैसी फ़सलें और फूल, ऑर्किड जैसे पुष्प उत्पाद भी पैदा करता है। इन उत्पादों की बढ़ती माँग के साथ, इन उत्पादों के उत्पादन और व्यापार की अपार संभावनाएँ हैं।

यह दर्शाता है कि कैसे पारंपरिक कृषि उत्पादों के मिश्रण को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की ओर स्थानांतरित करके कृषि क्षेत्र को एक गतिशील और व्यावसायिक क्षेत्र में बदला जा रहा है, जिसमें उत्पादन दर में तेज़ी लाने की उच्च क्षमता है।

कृषि में विविधीकरण को प्रौद्योगिकी या उपभोक्ता मांग, व्यापार या सरकारी नीति, परिवहन, सिंचाई और अन्य बुनियादी ढांचे के विकास में परिवर्तन द्वारा समर्थन मिल रहा है।

बागवानी उत्पादन में बढ़ती प्रवृत्ति-

विविध भौगोलिक, जलवायु और मृदा विशेषताएँ भारत को विभिन्न बागवानी फसलें उगाने में सक्षम बनाती हैं। इनमें फल, सब्जियाँ, मसाले, काजू, नारियल, कोको, सुपारी आदि शामिल हैं। वित्त वर्ष 2022 में कुल बागवानी उत्पादन 342.333 मिलियन टन अनुमानित है, जो 2020-21 की तुलना में लगभग 7.03 मिलियन टन (2.10% वृद्धि) अधिक है।

पिछड़े क्षेत्रों में कृषि का विकास-

हरित क्रांति के बाद के दौर में, नई कृषि रणनीतियों, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग मुख्यतः विशिष्ट खाद्यान्नों, जैसे गेहूँ और चावल, के उत्पादन तक ही सीमित था। हालाँकि, उदारीकरण की लहर के तहत, कृषि निर्यात की बढ़ती माँग के साथ, कृषि गतिविधियों के कई नए क्षेत्र अनुकूल और लाभदायक बन गए हैं।

कृषि की दृष्टि से पिछड़े कुछ क्षेत्रों में, जहाँ सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं है और संसाधन भी कम हैं, शुष्क भूमि कृषि शुरू की गई है। बागवानी, फूलों की खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन आदि जैसी अन्य गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया गया है। इन क्षेत्रों के विकास को गति देने के लिए, पिछड़े क्षेत्रों में विभिन्न आधुनिक तकनीकें स्थापित की गई हैं।

एरियल इमेजिंग-

एरियल इमेजिंग में सिंचाई परियोजनाओं की क्षमता और भूमि क्षरण, कटाव और जल निकासी पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) तकनीक का उपयोग शामिल है। इस तकनीक के दृश्य किसी एक पौधे की पत्तियों का आकलन करने में मदद करते हैं। इन दृश्यों का उपयोग कीटों और बीमारियों का पता लगाने और फसलों को पर्यावरणीय खतरों से बचाने के लिए सक्रिय रूप से किया जाता है। यह मुख्य रूप से किसानों को खेतों की मिट्टी की स्थिति की निगरानी करने में मदद करता है और गर्मियों के मौसम में उपयोगी होता है जब पानी की उपलब्धता सबसे कम होती है।

हाइड्रोपोनिक्स और वर्टिकल फार्मिंग

हाइड्रोपोनिक्स खेती की अवधारणा कम पानी की खपत के साथ बेहतर उपज, बनावट और अंतिम उत्पाद के स्वाद पर केंद्रित है। हाइड्रोपोनिकली उगाए गए पौधों को व्यापक जड़ प्रणालियों की आवश्यकता नहीं होती है और यह उन्हें पत्तियों और फलों के उत्पादन में अधिक ऊर्जा का योगदान करने की अनुमति देता है। घर के अंदर खेती के कारण, ये पौधे जल्दी परिपक्व होते हैं और कीटों और अन्य बीमारियों के प्रति बेहतर प्रतिरोधक क्षमता रखते हैं। स्थिरता के संदर्भ में, ऊर्ध्वाधर खेती खेतों को उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों के पास या भीतर स्थित होने की अनुमति देती है जिससे परिवहन और किसी भी हानिकारक उत्सर्जन की आवश्यकता कम हो जाती है। ऊर्ध्वाधर खेती शहरी वातावरण में फसलें उगाने की क्षमता प्रदान करती है और ताज़ा खाद्य पदार्थों की सुविधाजनक उपलब्धता में योगदान करती है। यह खेती पारंपरिक खेती के तरीकों की तुलना में फसल उगाने के लिए आवश्यक भूमि की मात्रा को काफी कम कर देती है।

महिलाएं और युवा: भारतीय कृषि का नया चेहरा

कृषि में समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी प्रगति को अपनाना समाधान का केवल एक हिस्सा है। आधुनिक भारत में फैले महिला स्वयं सहायता समूह और महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियाँ, कृषि कार्यबल का 33% हिस्सा बनने वाली महिलाओं को स्व-रोज़गार के लिए सक्षम बनाती हैं। स्वयं सहायता समूह महिलाओं की साक्षरता में सुधार ला रहे हैं और उन्हें ऋण प्राप्त करने और स्वयं के लिए योजना बनाने जैसे वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता प्रदान कर रहे हैं। साथ ही, भारत चुस्त कृषि उद्यमियों के साथ बदल रहा है, जो आधुनिक रूप से शिक्षित युवा लोगों के लिए एक आधुनिक शब्द है, जो अत्याधुनिक व्यावसायिक मॉडलों और आधुनिक तकनीकों से लैस हैं, अपनी भारतीय जड़ों की ओर लौट रहे हैं और बदलाव लाने के लिए तत्पर हैं।

उन्हें एग्रीटेक इन्क्यूबेटरों, ग्रामीण नवाचार केंद्रों और सदैव तत्पर सरकार का समर्थन प्राप्त है, जो निश्चित रूप से ग्रामीण भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण कर रहा है।

भविष्य की संभावनाएं

भारत को कृषि नवाचार में अग्रणी बनने के लिए जैव प्रौद्योगिकी को अपनाना आवश्यक है।

- एचटी-बीटी कपास, बीटी बैंगन और जीएम सरसों जैसी उन्नत जैव प्रौद्योगिकी फसलों को व्यावसायिक रूप से विकसित करने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री की "जय अनुसंधान" पहल, जिसे महत्वपूर्ण आरडीआई फंड का समर्थन प्राप्त है, का उद्देश्य नवाचार को बढ़ावा देना है।
अंत में, जीन क्रांति का नेतृत्व करने की भारत की क्षमता नियामक बाधाओं को दूर करने और सतत कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों को अपनाने पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष :

जबकि विश्व 2050 तक 9 अरब लोगों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए संघर्ष कर रहा है, भारत सुरंग के अंत में एक रोशनी की तरह है, जहां भारत न केवल परम्परागत और नवीनता के साथ फसलें उगा रहा है, बल्कि भविष्य के लिए व्यापक संरचना भी विकसित कर रहा है।

- **भारत में बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती औसत आय** और **वैश्वीकरण के प्रभावों के कारण** मात्रा, गुणवत्ता और पौष्टिक भोजन, तथा भोजन की विविधता की मांग बढ़ेगी। इसलिए, अधिक मात्रा, विविधता और गुणवत्ता वाले भोजन का उत्पादन करने के लिए उपलब्ध कृषि योग्य भूमि में कमी का दबाव बढ़ता ही जाएगा।

- यद्यपि कृषि क्षेत्र की बाधाएँ उत्पादकता और लाभ को जटिल बनाती हैं, फिर भी भारत के कृषि क्षेत्र में अभी भी **अपार संभावनाएँ** मौजूद हैं। कृषि क्षेत्र की सभी चुनौतियों को **अवसरों** में बदलने के प्रयास किए जा रहे हैं और यही प्रक्रिया कृषि का भविष्य है।

- **हालाँकि भविष्यवाणियाँ भविष्य पर प्रकाश डाल सकती हैं, फिर भी हम अभी उस स्थिति में नहीं हैं।** किसानों की एक पूरी नई पीढ़ी, जो अभी पैदा भी नहीं हुई है, सदी के मध्य तक खेती करेगी, और अब और तब के बीच बहुत कुछ ऐसा होगा जिसका हम **अनुमान नहीं लगा सकते।** लेकिन अगर अतीत और वर्तमान भविष्य का संकेत हैं, तो **भारतीय किसान नवाचार को अपनाकर फसल उत्पादन के बेहतर तरीके खोजते रहेंगे। सामाजिक समानता, लैंगिक समानता और पर्यावरणीय न्याय** जैसे मुद्दे **कृषि और सामाजिक प्रगति** के महत्वपूर्ण स्तंभ बने रहेंगे , और भारत को आने वाले वर्षों में बड़ी छलांग लगानी होगी।

भारत की "मिट्टी से शिखर तक" की यात्रा खाद्य उत्पादन से कहीं आगे है; यह स्थिरता, लचीलेपन और समता का लाभ उठाने के बारे में है। यह हरित क्रांति की विरासत से आगे बढ़कर एक हरित क्रांति की ओर बढ़ रहा है जिसमें पारिस्थितिक स्थिरता, तकनीकी सक्षमता और सामाजिक -आर्थिक समावेशन शामिल है।

****

राहुल शर्मा
ग्राहक सेवा सहयोगी
रायसिंहनगर शाखा

साइबरस्पेस और इंटरनेट

"मनुष्य पूरे इंटरनेट को नियंत्रित करने के लिए एक कृत्रिम रूप से बुद्धिमान प्रणाली बनाता है। यह सुपर सिस्टम सशस्त्र साइबरबोर्ग की एक बटालियन को भी नियंत्रित करता है। एक दिन सुपर सिस्टम मनुष्यों को एक खतरे के रूप में पहचानता है। यह मानव जाति को खत्म करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देता है।" यह कथानक एक सफल हॉलीवुड फिल्म का है। और ऐसी कई फिल्में बनी हैं और उपन्यास लिखे गए हैं जो यह दिखाते हैं कि कैसे प्रौद्योगिकी मानव सभ्यता को विलुप्त होने के कगार पर ले आएगी।

इंटरनेट का आविष्कार प्रौद्योगिकी में सबसे बड़ा व्यवधान था। इक्कीसवीं सदी में इसका भारी अनुपात में विकास हुआ और इसने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में एक अपरिहार्य स्थान बना लिया। आज, साइबरस्पेस हम मनुष्यों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत क्षेत्र को छू रहा है। यह संस्था के भीतर एक संस्था है - बैंक - बड़े और छोटे, परिवहन - वायु, भूमि, जल, सरकारें - उत्तर या दक्षिण, रक्षा संस्थान और शैक्षणिक संस्थान - इंटरनेट बुनियादी ढांचे पर बहुत अधिक निर्भर हैं। सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम सेवाएं, आईटीईएस सबसे विकसित और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में सेवा क्षेत्र में तेजी से हिस्सेदारी हासिल कर रही है। इंटरनेट की पहुंच भीतरी इलाकों, अल्प विकसित देशों और गरीबों के बीच बढ़ रही है। संचार के पारंपरिक साधनों का स्थान वीडियो कॉल, चैट और सोशल नेटवर्किंग ने ले लिया है। व्यक्तियों द्वारा उन पर बहुत अधिक समय बिताने का मतलब है कि वास्तविक दुनिया में उनके पास एक-दूसरे के लिए कम समय है। व्यक्ति दुनिया भर में क्या हो रहा है इसके बारे में अधिक चिंतित हो रहा है लेकिन अपने परिवार के प्रति उदासीन हो रहा है। जब साइबरस्पेस शयनकक्ष पर आक्रमण करता है तो पत्नी और पति के बीच भावनात्मक शून्यता रिश्ते टूटने की ओर ले जाती है। लंबी अवधि में, व्यक्तिगत स्थान पर साइबर आक्रमण मनुष्य के मौलिक चरित्र को बदल सकता है, उसे साथी मनुष्यों के प्रति उसकी भावनाओं से वंचित कर सकता है।

इंटरनेट ने सूचनाओं का खजाना खोल दिया है। बहुत सारी जानकारी जो हम माता-पिता के रूप में चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपने जीवन के अंत में प्राप्त करें। हिंसा, गोलीबारी, मारपीट, हत्या जैसे ऑनलाइन गेम्स का बच्चों पर प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इंटरनेट पर अधिकांश सामग्री स्पष्ट सामग्री से संचालित नहीं होती है। सोशल नेटवर्किंग साइटों का उद्देश्य एक खुले समाज की स्थापना करना है जहां व्यक्ति को इंटरनेट स्पीड पर

बड़े दर्शकों के सामने अपनी बात कहने की आजादी मिले।

इसका स्याह पक्ष यह है कि यह नकारात्मकता फैलाने और अवैध व्यापार में लिप्त होने का मंच बन गया है। इसका उपयोग दण्ड से मुक्ति के लिए ट्रोल करने और बदनाम करने, अफवाहें फैलाकर सांप्रदायिक आग भड़काने, आतंकवादियों की भर्ती करने और लगभग हर अवैध चीज़ का व्यापार करने के लिए किया जाता है। फिर गोपनीयता संबंधी चिंताएँ, राज्य-प्रायोजित जासूसी और विशाल व्यक्तिगत डेटा फ़ुटप्रिंट का ग़लत हाथों में पड़ना भी शामिल है।

क्या इससे मनुष्य विक्षिप्त हो जाएंगे, सरकारों पर अविश्वास करने लगेंगे और षड्यंत्र के सिद्धांतों पर विश्वास करने लगेंगे? सरकारें हमारे जीवन में और अधिक मुखर हो जाएंगी। आगे चलकर लोगों को विद्रोह करना पड़ेगा।

साइबरस्पेस प्रोपेगेंडा फैलाने का माध्यम बन गया है. इसका उपयोग आईएसआईएस द्वारा धार्मिक प्रचार फैलाने, कश्मीर घाटी में नागरिक अशांति को बढ़ाने और सरकारों द्वारा चुनाव परिणामों को प्रभावित करने के लिए किया गया है । दुनिया भर में राजनीतिक अशांति के रूप में शुरू होने वाली स्थिति युद्ध का कारण बन सकती है। अब पारंपरिक युद्ध में एक अतिरिक्त आयाम के रूप में साइबर युद्ध के साथ, विनाश व्यापक और मानव सभ्यता के लिए विनाशकारी हो सकता है। हालाँकि यह बेहद असंभावित लगता है। आतंकवादियों या सरकारों द्वारा छोटे पैमाने पर गुमनाम साइबर हमले होने की संभावना है। इसमें महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर हमला करने की क्षमता है। हमें भविष्य में ऐसे हमलों से निपटने के लिए खुद को तैयार करना होगा। इंटरनेट और साइबरस्पेस एक दोधारी तलवार है। एक ओर जहां मानव सभ्यता को इनसे भारी लाभ होगा, वहीं दूसरी ओर इसका उपयोग मानव जाति के विरुद्ध किए जाने की प्रबल संभावना है। हम ही हैं जो इनका उपयोग करते हैं और हमें ही इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए तंत्र बनाना है। हमें चाकू की धार पर चलना होगा। मानव जाति का भविष्य हमारे हाथ में है।

****

सरस्वती कुमारी
प्रबन्धक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय जोधपुर

लक्ष्य 2.0

दिनांक 10.01.2026 को जोनल हेड कॉनक्लेव, जैसलमेर में अंचल कार्यालय, जोधपुर की छमाही पत्रिका यूको मरुधरा का विमोचन "माननीय प्रबंध निदेशक महोदय श्री अश्वनी कुमार जी, कार्यपालक निदेशक श्री राजेंद्र साबू जी, कार्यपालक निदेशक श्री विजय कुमार निवृत्ति कांबले जी, मुख्य महाप्रबंधक श्री गौतम पात्रा जी, मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश नागर जी तथा अंचल प्रमुख, जोधपुर श्री जितिन चौधरी जी" के कर कमलों से किया गया।

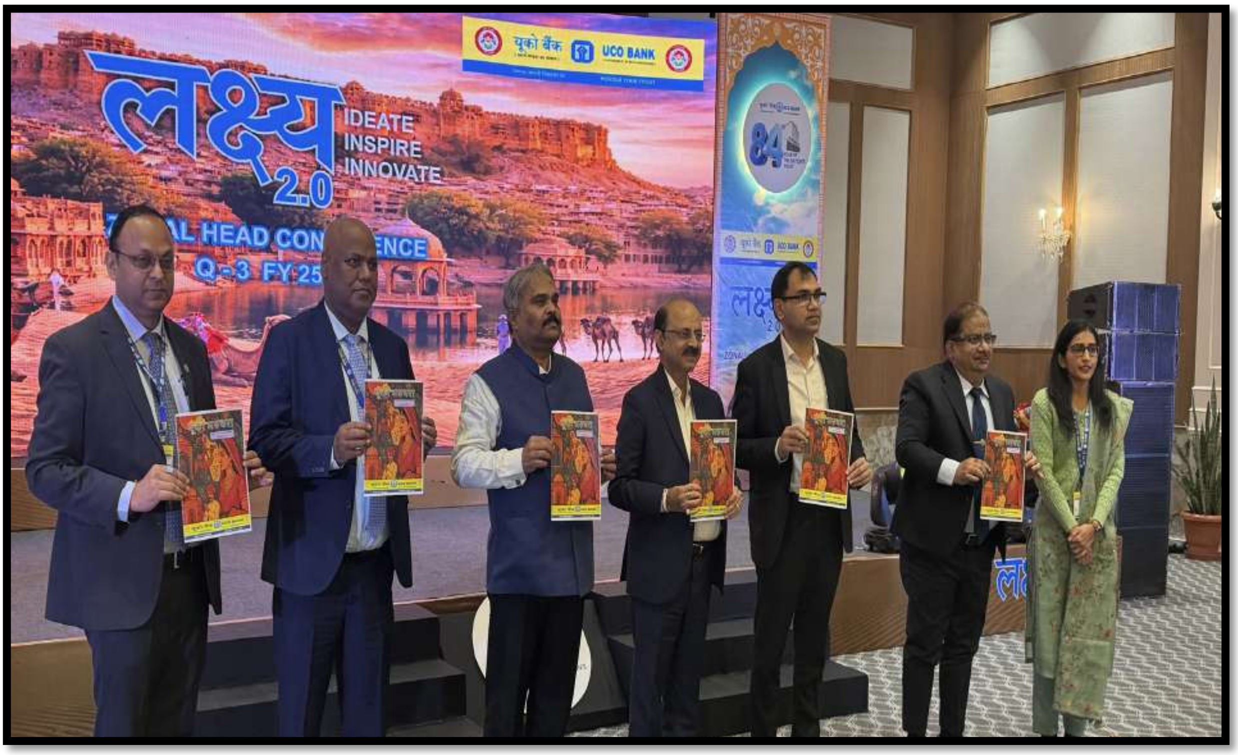

भारत – विभिन्नताओं से बना एक सम्पूर्ण चित्र

घर से ऑफिस के लिए बस मे सवार हुआ ही था की देखा की हमारे साथ नियमित रूप से आवागमन करने वाले साथी किसी गंभीर मुद्दे पर चर्चा कर रहे थे । मैंने हमेशा की तरह ही सभी को सुप्रभात किया पर किसी ने भी मेरी बात की ओर ध्यान नहीं दिया। मैं हतप्रभ सा देखने लगा की आज इतनी गंभीर चर्चा किस विषय पर हो रही है, कुछ समय तक मुझे समझ नहीं आया तब पास वाली सीट पर बैठे जल संचार विभाग में काम करने वाले बाबूजी ने बताया कि आज सभी साथी वर्तमान भारत की जो तस्वीर विश्वपटल पर है उसको बनाने मे किसका कितना योगदान है पर चर्चा कर रहे है। यह बात सुनकर मेरे मन में भी उत्सुकता जगी और मैं पूरी तल्लीनता से सुनने लगा।

बस के अंतिम स्टॉप के गाँव के स्कूल के प्राचार्य कह रहे थे की जो भारत की वर्तमान तस्वीर है उसमें सबसे ज्यादा योगदान शिक्षा का है, आज भारत मे शिक्षा है वो अर्थ विज्ञान खगोल संस्कृति से परिपूर्ण है जिसकी वजह से आज भारत का विद्वान हर क्षेत्र हर देश में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और भारत के विकास मे अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। इतने में बीच वाली सीट पर बैठे मंदिर के पुजारी अपने पास बैठे मौलवी से कहने लगे देखो मियां भारत निर्माण में धर्म का भी कोई कम योगदान नहीं है। आज भारत मे धर्म निरपेक्षता की वजह से ही हर धर्म, जाति और संप्रदाय के लोग सुख, चैन और शांति से रह रहे है। यह हमारी धर्म शिक्षा ही है जो सभी को एक साथ मिलकर भारत के विकास में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। मौलवी जी भी जवाब मे बोल पड़े – बाबाजी बात तो सही है हमारे धर्म ने सभी के सुखमय जीवन के साथ ही ऐसी ऐसी शिक्षाएं दी है जो हर व्यक्ति अपने लक्ष्य प्राप्ति मे सफल हो सका है, बिना धर्म के एक सम्पूर्ण समाज की कल्पना करना ही मुश्किल है। उसी बस मे गले मे गमछा डाले बैठे सहयात्री ने थोड़ा सा पीछे देख कर बोला कि ऐसा नहीं है कि हमारा तबका ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं है तो हम हमारे राष्ट्र के निर्माण मे भागीदार नहीं है, हर खेतिहर किसान भी अपनी कठिन मेहनत कर अपने राष्ट्र के विकास में योगदान दे रहा है। आज भारत अपने खाद्यान के मामले मे आत्मनिर्भर तो है ही साथ ही जरूरत मंद देशों को भी गेहूं,चावल व अन्य खाद्यान का निर्यात करता है, यह हमारा योगदान है। साथ ही हम लोग पर्यावरण संरक्षण में, पानी बचाओ जैसे महत्वपूर्ण समकालीन मुद्दों पर नई

तकनीक अपना कर भारत ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति के विकास में भागीदार बन रहें है और तो और मैं ज्यादा नहीं पढ़ सका तो क्या हुआ अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा दूंगा ताकि वो भारत की अच्छी नागरिक बने। इतने 7 वी क्लास मे पड़ने वाला एक बच्चा भी उचक कर अपनी मासूमियत भारी आवाज मे बोल पड़ा की मैं इतनी अच्छी पढ़ाई करूंगा की एक अच्छा नागरिक बन भारत के विकास में अपना योगदान दूंगा तथा अपनी शिक्षा और ज्ञान से भारत की समकालीन समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिए नए नए आविष्कार करूंगा। मैं अपना आदर्श मौलाना अब्दुल कलाम को मानता हूँ मैं एक दिन वैसा नागरिक बनूँगा की उनके जितना योगदान अपने राष्ट्र निर्माण मे दे सकूँ। उनके ही पास बैठे एक बुजुर्ग ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा "बेटा भारत का भविष्य एक विद्यार्थी ही है, तुम खूब पढ़ाई करना और अपने भारत को नई बुलंदियों तक ले जाना" वैसे हमने मिलकर किया वो भी कोई कम नहीं है, हमने राष्ट्र में से बड़ी बड़ी समस्याओं को भगाया है जैसे बाल विवाह, छुआछूत, अशिक्षा, नारी शिक्षा और बहुत सारी जो हमारे समाज के विकास मे बाधा थी। अब आपके सामने एक नया भारत है इसको और आगे तक ले जाना आप लोग। अब मेरा गंतव्य आ गया है ये देश आप सबके हवाले कहते हुए वो बस के कन्डक्टर को रोकने का इशारा करने और घुटने पर हाथ रख कर उतर जाते है। (मुझे ऐसा लगा जैसे वो महान लोग जो हमारे देश के लिए इतना कुछ करके ऐसे ही एक महान देश सौंप कर अपनी यात्रा पूरी करके इस विरासत को हमारे भरोसे छोड़ कर गए हैं कि हम इसे और आगे तक ले जाएंगे। मैं इसी ख्याल मे खोया था कि एक गाँव मे दुकानदारी का व्यवसाय करने वाले सेठ भी बोल पड़े, सुन भाया हमारे राष्ट्र निर्माण में हम लोगों का भी योगदान है की नहीं, सब अपनी ही अपनी बता रहे है, हम व्यवसायी लोग अपने व्यवसाय से हमारे राष्ट्र की आय में अर्थव्यवस्था की वृद्धि मे योगदान देते है। हमारे व्यवसाय में भारत से आयात निर्यात या घरेलू लेनदेन से जो आय होती है वो हमारे विकास कार्यों मे उपयोग होती है। व्यवसायी लोगों के साथ साथ जो लोग अपनी आय पर टैक्स चुका रहे है उस आय से हमें मूलभूत सुविधायें मिलना आसान हो जाती है। इसलिए थोड़ा सा योगदान तो हमारा भी बनता है ना, वो हम हमारे राष्ट्र के विकास और निर्माण के लिए करते रहेंगे। इतने मे दूर से सुन रहा बस का ड्राइवर भी जोर से बोला " हाँ हाँ देखो ने ये सड़क कितनी अच्छी बन गई है कि बस चल रही है फिर भी आपकी बाते आसानी से सुनाई दे रही है अब न खड्डे है न खट पट की आवाज, इसीलिए मैं भी अपनी बस का रोड टैक्स सही समय से भर कर अपना योगदान भी दे रहा हूँ, और आप लोगों से निवेदन है आप सब अपना मासिक पास थोड़ा जल्दी बनवा ले ताकि मैं अपना टैक्स भुगतान करके महीने भर के लिए निश्चिंत हो जाऊँ। इतना कहते हुए उसने बस साइड मे रोक दी और बोल पड़ा "डॉक्टर साहिब आप भी आ जाइए आपका भी योगदान राष्ट्र निर्माण में बहुत

महत्वपूर्ण है, जब हम सब स्वस्थ होंगे तभी तो एक खुशहाल और सफल जिंदगी जी पायेंगे। आप हमारे राष्ट्र को स्वस्थ रखने के लिए हर समय अपनी सेवाएँ देते है" ऐसा कहते कहते बस को आगे बढ़ा कर एक राष्ट्र भक्ति गीत चला दिया।

हम सब उस संगीत का आनंद ले ही रहे थे कि एक साथी के और बैठने का समय आ गया था और हमने समुअल जोसेफ, जो की पेशे से वकील है, का स्वागत किया। एक पल तो वो इस माहौल को समझ ही नहीं पाए इतने मे आदमपुर गाँव के सरपंच ने उन्हें अपने पास बैठाते हुआ कहा कि "देखिए वकील साहब आज जब से बस रवाना हुई है तब से हर कोई राष्ट्र निर्माण मे अपना योगदान बता रहा है, तो अब आप अपना बताइए और जब आपका हो जाए तो थोड़ा सा हम नेता लोगों का भी बता दीजिएगा, पर हाँ इसकी फीस हम नहीं दे पायेंगे" यह बात सुन कर बस में बैठे सभी साथियों की हंसी फुट पड़ी"

फिर क्या वकील साहब ने भी राष्ट्र के विकास में न्यायपालिका के योगदान बारे मे बताया की कैसे राष्ट्र निर्माण के लिए बनाए गए उस कानून को तोड़ने वाले हर गुनहगार को उसके गुनाह के अनुरूप सजा देना और बेगुनाह को न्याय, से हर नागरिक शांति और सुरक्षित रूप से अपने अधिकारों के साथ अपना और अपने राष्ट्र के विकास में योगदान दे पाता है। यह जो विधायिका हमारे राष्ट्र के अच्छे के लिए नियम कायदे बनाते है और उनके पालन हो न होने पर सजा या न्याय देना हमारा काम है। और इसी वजह से हमारा समाज और राष्ट्र भी मुक्त रहकर अपना योगदान भारत निर्माण में दे पता है।

इस बीच वकील साहब को बीच मे रोकते हुए पीछे की सीट से उठ कर बस के दरवाजे की तरफ आते हुए बलवीर सिंह बहरथ जो कि भारतीय सेना मे कामन्डैन्ट थे अपने जोशीले स्वभाव में बोले " देखो सम्माननीय नागरिकों, आप सभी अपना अपना योगदान हमारे राष्ट्र निर्माण में देते रहिए, भारतीय सेना आपको हर पल, हर मौसम चाहे सर्दी बर्फ रेगिस्तान समुन्द्र में सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी लिए राष्ट्र की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध है।

आप सभी की राष्ट्र भक्ति की बातों को सुनकर कर अच्छा लगा, अब मैं आप लोगों की इस चर्चा के बीच से जा रहा हूँ माफी चाहूँगा। जय हिन्द जय भारत (कहते हुए बस से उतर गए)। मैं इन सबको को इतने मन से सुन रहा था और मन में उतार रहा था जैसे एक चित्रकार कागज पर एक चित्र बना देता है कि हमारे राष्ट्र का हर नागरिक, तबका, विभाग, धर्म, समुदाय सब मिलकर एक ऐसे विकसित, धर्मनिरपेक्ष, विश्व पटल पर अग्रणी भारत का निर्माण करते है मानो जिसकी परिकल्पना किसी चित्रकार ने अपने चित्रमें की हो। आज मैंने उस राष्ट्र का दर्शन एक बस में सुबह से शाम तक साथ यात्रा करने वाले कुछ लोगों के भीतर ही कर लिया है।

ओंकार राम टाक
वरिष्ठ प्रबंधक
पाल रोड़ शाखा

****

"भारत केवल एक देश नहीं, बल्कि संस्कृतियों का जीवंत संगम है।"

ग्रामीण विकास में अग्रणी बैंक की भूमिका

किसान कल्याण और ग्रामीण क्षेत्रों के चहुंमुखी विकास के लिए अग्रणी बैंक परियोजना इस देश में परिकल्पित की गई है।

भारत की अर्थव्यवस्था को कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था कहा जाता है क्योंकि भारत की लगभग 71% जनसंख्या कृषि आधारित उद्योगों से अपना जीवनयापन करती है। भारत पूरे विश्व में लगभग 1.5% खाद्य उत्पादनों का निर्यात भी करता है। इस देश के सकल घरेलू उत्पादन का लगभग 14.2% भाग कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार मिलता है। अतः कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए ग्रामीण विकास व सशक्तिकरण अत्यावश्यक हो जाता है। इसलिए बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात (1969), प्रो. गाडगिल समिति की अनुशंसा पर लीड बैंक स्कीम या अग्रणी बैंक परियोजना प्रारम्भ की गई। बाद में नरीमन समिति ने इसकी औपचारिकताओं को अंतिम रूप दिया।

अग्रणी बैंक परियोजना – एक परिचय

अग्रणी बैंक अथवा लीड बैंक योजना में बैंक (सार्वजनिक क्षेत्र या निजी क्षेत्र दोनों में से) को आवंटित जिलों में अग्रणी भूमिकाएं सौंपने का प्रावधान है। अग्रणी बैंक आवंटित जिलों में कृषि, लघु उद्योग, ग्रामीण तथा अर्धशहरी क्षेत्रों के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में शामिल विषय व अन्य आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण (क्रेडिट) प्रवाह बढ़ाने हेतु सभी ऋणदाता संस्थाओं के मध्य समन्वयक भूमिका निभाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ऋण प्रवाह को बढ़ाने हेतु विभिन्न मंचों के माध्यम से बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थाओं की गतिविधियों का समन्वय करना है। अग्रणी बैंक स्कीम की अंतिम समीक्षा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के भूतपूर्व डिप्टी गवर्नर श्रीमती उषा थोराट की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति ने 2009 में की, इस उच्च स्तरीय समिति ने यह उल्लेख किया कि यह योजना शाखा विस्तार, जमा जुटाने और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में, विशेष रूप से ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी क्षेत्रों के सुधार में मूल उद्देश्य को प्राप्त करने में उपयोगी रही है।

अग्रणी बैंक योजना के तहत फोरम (मंच)

1. ब्लॉक (उपखंड) लेवल बैंकर्स समिति
2. जिला परामर्शदात्री समिति
3. राज्य स्तर की बैंकर्स समिति

1. ब्लॉक (उपखंड) लेवल बैंकर्स समिति : यह मंच ब्लॉक (उपखंड) क्रेडिट योजना के कार्यान्वयन की समीक्षा करता है और बैंकों के क्रेडिट कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में परिचालन समस्याओं को भी हल करता है। उपखंड में कार्यरत सभी बैंक, जिला केंद्रीय सहकारी बैंक, आरआरबी, उपखंड विकास अधिकारी, अन्य अधिकारी (कृषि, उद्योग, सहकारी समितियों के विभाग अधिकारी) इसके सदस्य हैं। पंचायत समितियों के प्रतिनिधियों को अर्धवार्षिक अंतराल पर बैठकों में भाग लेने के लिए भी आमंत्रित किया जाता है ताकि वे ऋण नियोजन व्यापार में ग्रामीण विकास पर अपना ज्ञान और अनुभव साझा कर सकें।

2. जिला परामर्शदात्री समिति: लीड बैंक योजना के तहत विभिन्न विकास गतिविधियों को लागू करने में समन्वय की सुविधा के लिए बैंकों के साथ-साथ सरकारी एजेंसियों/विभागों के लिए जिला स्तर पर एक आम मंच के रूप में प्रारंभिक स्तर (1970) के दशक में जिला स्तर पर जिला परामर्शदात्री समिति का गठन किया गया।

जिला कलेक्टर इस समिति का अध्यक्ष होता है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, नाबार्ड, जिले के वाणिज्यिक बैंक, जिला केंद्रीय सहकारी बैंक, आरआरबी, विभिन्न राज्य सरकार के विभागों और संबंधित एजेंसियों सहित सहकारी बैंक इस समिति के सदस्य हैं। त्रैमासिक बैठकों द्वारा विशिष्ट मुद्दों पर सघनता से काम करने (सूक्ष्म, लघु और मध्यम विकास उद्योगों के विषय पर), वित्तीय समावेशन इसके मुख्य लक्ष्य हैं।

अग्रणी बैंक / लीड बैंक अधिकारी की भूमिका

- जिला ऋण योजना के कार्यान्वयन की निगरानी
- बैंकों द्वारा वित्तीय साक्षरता केंद्र, आरएसईटीआई की स्थापना के साथ सहयोग
- ग्रामीण शाखाओं में वित्तीय साक्षरता शिविर का आयोजन
- वाणिज्यिक बबैठकों में शिकायत निवारण की व्यवस्था

3. राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति: राज्य के विकास के लिए एक समान आधार पर सभी राज्यों में पर्याप्त समन्वय मशीनरी बनाने के लिए एक सर्वोच्च अंतर-संस्थागत मंच के रूप में राज्य स्तर के बैंकर्स समिति का गठन 1977 में किया गया था। इसकी अध्यक्षता संयोजक बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक करते हैं। इसमें सभी बैंकों व वित्तीय संस्थानों के अलावा राष्ट्रीय आयोग के अनुसूचित जातियों/ जनजातियों, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, खादी और ग्रामोद्योग आदि के प्रतिनिधि शामिल हैं।

राज्यों के विकास में राज्य स्तर पर बैंकरों की एक समिति के रूप में इसकी पहचान करते हुए, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठकों के संचालन पर दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

अग्रणी बैंक योजना का कार्यान्वयन

i) क्रेडिट (ऋण) योजना तैयार करना – अग्रणी बैंक योजना के क्रियान्वयन में विकास के लिए मौजूदा क्षमता को मैप करने के लिए डाउन अप (नीचे से ऊपर) दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

ii) संभावित लिंक्ड क्रेडिट प्लान – बैंक क्रेडिट के माध्यम से विकास की मौजूदा क्षमता के मूल उद्देश्य के साथ विकेन्द्रीकृत ऋण योजना की ओर एक कदम है। जिसमें कार्यरत सभी वित्तीय संस्थान नियुक्त जिले की ऋण जरूरतों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन व ऋण हेतु नियत कुल राशि का निर्धारण इस योजना के अंतर्गत किया जाता है।

iii) क्रेडिट योजना के प्रदर्शन पर निगरानी -

- ब्लॉक (उपखण्ड) स्तर पर → ब्लॉक स्तरीय बैंकर्स समिति (बीएलबीसी)
- जिला स्तर पर → जिला परामर्शदात्री समिति (डीसीसी) और जिला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी)
- राज्य स्तर पर → स्टेट लेवल बैंकर्स कमेटी (एसएलबीसी)

अग्रणी बैंक योजना ग्रामीणों के जीवन स्तर को सुधारने, बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने में भारत देश की अर्थव्यवस्था में मील का पत्थर साबित हुई है।

अग्रणी बैंक का ग्रामोत्थान के लिए एजेंडा -

i) वित्तीय समावेशन योजना (एफ आई पी) के तहत प्रगति की समीक्षा

ii) समावेशी विकास के लिए बैंकिंग विकास के लिए 'एनेबलर्स' को सुलझाने और 'कमोडिटी' कम करने के मुद्दे।

iii) व्यवसायों का प्रबंधन करने के लिए कौशल और क्षमता निर्माण के लिए बैंको और राज्य सरकारों जैसे वित्तीय साक्षरता केंद्र की स्थापना जैसे 'क्रेडिट प्लस' गतिविधि चालू करना !

iv) वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना

v) प्राथमिकता वाले क्षेत्र में ऋण प्रवाह और समाज के कमजोर वर्ग का उत्थान

vi) 2022 तक किसानों की आय का दोहरीकरण

vii) स्वयं सहायता समूह द्वारा बैंक लिंकेज

viii) राहत उपायों की समीक्षा (प्राकृतिक आपदाओं के मामले में)

ix) राज्य की वार्षिक ऋण योजना (एससीपी) के तहत बैंकों के प्रदर्शन की समीक्षा !

x) शैक्षिक ऋणों का अनुदान

xi) सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों के लिए विशेष अनुदान जारी करना एवं पैकेज जारी करवाना

xii) सरकार प्रायोजित योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा, प्रधानमंत्री जीवन बीमा, अटल पेंशन योजना इत्यादि जन-जन तक पहुँचाना।

भारत की लगभग अस्सी प्रतिशत (80%) जनता ग्रामवासिनी है यदि देश की ग्रामीण जनता के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा तो बीस प्रतिशत शहरी लोगों की उन्नति के बल पर राष्ट्रीय उन्नति का स्वप्न देखना बेईमानी होगी। कई शताब्दियों से ग्राम निवासी भूख, रोग, अज्ञानता और शोषण से पीड़ित है अग्रणी बैंक योजना, बैंको के राष्ट्रीयकरण (1969) के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है ये योजना ग्रामीण क्षेत्रो मे समावेशी विकास के साथ-साथ ग्रामीण सशक्तिकरण मे भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

****

सुमित बोहरा
ग्राहक सेवा सहयोगी
चोपासनी हाउसिंग बोर्ड शाखा

यूको बैंक
UCO BANK

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के साथ अपने भविष्य को सुरक्षित करें

₹20/- सालाना प्रीमियम में पाएं **₹2** लाख की दुर्घटना बीमा सुरक्षा!

सभी बैंक खाताधारकों के लिए जिनकी आयु **18** से **70** वर्ष है

*नियम एवं शर्तें लागू

1800-103-0123 (Toll Free) 8334001234 7666399400 Follow us

यूको बैंक
UCO BANK

यूको पिंक

निधि शर्मा, मास्टरशेफ इंडिया, फाइनलिस्ट, महिला ग्राहकों के लिए यूको पिंक बास्केट सहर्ष प्रस्तुत करती हैं।

पिंक बास्केट

महिलाओं के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए हमारे अनूठे जमा उत्पादों का चयन करें

यूको अपराजिता (बचत खाता)

- वैयक्तिक रूपे सिलेक्ट डेबिट कार्ड
- रु.**100** लाख तक का व्यक्तिगत दुर्घटना तथा मृत्यु कवर

यूको जया लक्ष्मी (चालू खाता)

- आरंभिक जमा राशि: रु. **5,000/-**
- रु. **5** लाख का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा का कवरेज

यूको संचयिका (फ्लेक्सी आवर्ती जमा)

- न्यूनतम मासिक जमा राशि: रु. **2,000/-**
- रु.**1.00** लाख का व्यक्तिगत दुर्घटना मृत्यु बीमा कवरेज

*नियम एवं शर्तें लागू

आवेदन हेतु स्कैन करें

यूको बैंक के साथ अपनी वित्तीय यात्रा की शुरूआत करें!